टिप्पणी

11

रेडियो कार्यक्रमों के फॉर्मेट

अब आप रेडियो स्टेशन के विषय में जान चुके हैं। पूर्व के अध्याय में आपको बताया जा चुका है कि रेडियो स्टेशन कैसे काम करता है।

जब आप किसी लोकप्रिय पत्रिका को पढ़ते हैं तो आपको नई चीजें उसमें मिलती हैं। उसका एक आकर्षक मुखपृष्ठ होता है। अंदर विभिन्न उत्पादों के विज्ञापन होते हैं। राजनीति से लेकर खेल तक विविध विषयों पर लेख होते हैं तथा सिनेमा, साक्षात्कार, फीचर आदि सामग्री भी होती है।

इसी तरह एक रेडियो केन्द्र के विविध प्रकार के कार्यक्रमों के बारे में सोचिए। फिल्म गीत, फोन–इन कार्यक्रम, वार्ताएँ, परिचर्चा, समाचार, क्रिकेट या आँखों देखा हाल आदि आपको याद आ रहे होंगे। यह विविध प्रकार के कार्यक्रम फॉर्मेट कहलाते हैं।

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के उपरांत आप निम्नांकित बिन्दुओं के बारे में जान सकेंगे–

- किसी रेडियो कार्यक्रम निर्माण के विविध कारकों की पहचान।
- रेडियो कार्यक्रम के विभिन्न फॉर्मेट का वर्णन।
- रेडियो कार्यक्रम के विभिन्न तत्वों की व्याख्या।
- प्रौद्योगिकी आधारित फॉर्मेट की पहचान।

11.1 रेडियो कार्यक्रम निर्माण के लिए महत्वपूर्ण कारक

आप जहाँ रहते हैं उस गाँव या शहर के बारे में सोचिए। आप पाएँगे कि आदमी–औरत, गरीब–अमीर हर तरह के लोग रहते हैं। रेडियो हम भारतवासियों के जीवन में महत्वपूर्ण

टिप्पणी

भूमिका अदा करता है। हालांकि हमारे देश में अमीर लोगों की कमी नहीं है। यहाँ ढेर सारे आधुनिक शहर भी हैं। लेकिन हमारी आबादी का एक बहुत बड़ा हिस्सा गरीब है तथा उनमें से बहुत सारे लोग लिख–पढ़ नहीं सकते। अतः रेडियो ही वह इकलौता माध्यम है जो उन्हें सूचित तथा शिक्षित कर सकता है और उनका मनोरंजन कर सकता है। सरकार द्वारा चलाए जा रहे रेडियो स्टेशन विशेष रूप से जनसेवा के कार्य में लगे हैं। रेडियो सुनने वाले सभी श्रोताओं की जरूरतें एक जैसी नहीं होतीं। उनकी सेवा करने के लिए हमें उनके विषय में जानना जरूरी होता है। आइए एक सूची बनाएँ कि श्रोता के बारे में किन तथ्यों को जानना आवश्यक है–

(क) लोगों की संख्या–जैसे क्षेत्र की कुल जनसंख्या।

(ख) स्त्री–पुरुष की संख्या–लिंग अनुपात।

(ग) साक्षर–निरक्षर लोगों की संख्या।

(घ) क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषा।

(च) विद्यालय/महाविद्यालय।

(छ) स्कूल जाने वाले बच्चों की संख्या।

(ज) उपलब्ध स्वास्थ्य सुविधाएँ–डॉक्टरों की उपलब्धता, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, क्लीनिक, अस्पताल।

(झ) प्रमुख बीमारियाँ।

(ट) क्षेत्र की जनसंख्या का धार्मिक अनुपात।

(ठ) विद्युत सुविधा।

(ड) पास स्थित रेडियो तथा टीवी केन्द्र।

(ढ) स्थान की जलवायु।

(त) लोगों का मुख्य व्यवसाय।

(थ) प्रतिव्यक्ति आय/गरीबी रेखा के नीचे रह रहे लोगों की संख्या।

(द) सड़क परिवहन सुविधाएँ।

(ध) सिंचाई सुविधाएँ।

(न) कृषि तथा अन्य व्यवसाय में संलग्न लोगों की संख्या।

(प) प्रमुख कृषि उपज।

टिप्पणी

आप और भी तथ्यों को इसमें जोड़ सकते हैं। हमें इन तथ्यों की आवश्यकता कार्यक्रम की भाषा, प्रकार तथा प्रसारण समय निर्धारण में होती है। रेडियो फॉर्मेट श्रोता की आवश्यकतानुसार निर्धारित होते हैं।

पाठगत प्रश्न 11.1

(1) पाँच कारकों का उल्लेख करें जिनका आप रेडियो कार्यक्रम निर्माण के समय ध्यान रखते हैं।

(2) रेडियो पर सुने गये पाँच कार्यक्रम का नाम दीजिए।

(3) उपयुक्त शब्दों की सहायता से रिक्त स्थान की पूर्ति करें–

(i) निरक्षर लोगों को सूचित ..... तथा मनोरंजन का इकलौता उपलब्ध माध्यम ..... है।

(ii) एक रेडियो केन्द्र विविध कार्यक्रमों जैसे वार्ता, परिचर्चा, ..., ..., ..., तथा ..... का प्रसारण करता है।

(iii) श्रोताओं की आवश्यकताओं की जानकारी प्रसारण ..... तथा कार्यक्रमों के ..... एवं ..... के लिए आवश्यक होता है।

(iv) रेडियो कार्यक्रमों का निर्धारण ..... के आधार पर होता है।

11.2 रेडियो फॉर्मेट के प्रकार

आपको रेडियो पर सुना हुआ कार्यक्रम याद है? उनमें से कुछ को याद करने की कोशिश करें। आपने उस रेडियो स्टेशन का नाम सुना होगा जहाँ से कार्यक्रम का प्रसारण हो रहा है। आपमें से बहुत सारे लोगों को विविध भारती, एआइआरएफएम गोल्ड या कुछ निजी वाणिज्यिक चैनलों के नाम जरूर याद होंगे। आपको यह भी याद होगा कि कार्यक्रम का समय तथा कौन सा कार्यक्रम आप सुनने जा रहे हैं, यह भी बताया जाता है। इनको उद्घोषणा कहा जाता है। उद्घोषणाएँ प्रायः वह लोग करते हैं जिन्हें उद्घोषक कहा जाता है। वाणिज्यिक रेडियो चैनल उन्हें रेडियो जॉकी (आरजे–RJ) या उद्घोषक (एनाउंसर) कहते हैं। रेडियो फॉर्मेट के विविध प्रकार जानने से पहले आपके लिए रेडियो फॉर्मेट के आवश्यक तत्वों की जानकारी होनी चाहिए।

जैसा कि आप जानते हैं रेडियो पर प्रसारित अधिकांश सामग्री को पहले लिखा जाता है। आप पहले ही यह जान चुके हैं कि रेडियो के लिए लेखन बोलने के लिए लिखना होता है न कि पढ़ने के लिए लिखना। लेकिन रेडियो पर बोले जाने वाले शब्द लिखे जाते हैं

या, उनकी स्क्रिप्टिंग होती है। रेडियो फॉर्मेट को तीन भागों में बाँट सकते हैं, यह हैं—

(क) उच्चारण हेतु शब्द या आवाज (मानवीय)

(ख) संगीत

(ग) ध्वनि प्रभाव

सभी रेडियो फॉर्मेट में उक्त तीनों तत्व सम्मिलित रहते है। अतः उच्चारित शब्द कार्य को वर्गीकृत करें—

1. **उद्घोषणा**—यह विशेष रूप से सूचित करने के उद्देश्य से लिखे गये स्पष्ट संदेश होते हैं। उदाहरणार्थ रेडियो स्टेशन/कार्यक्रम का परिचय। इसमें जो रेडियो स्टेशन आपने लगाया है तथा जिस प्रसारण फ्रिक्वेंसी, समय तथा कार्यक्रम/गाना जो आप सुनने जा रहे हैं उसका उल्लेख होता है। जैसा पहले भी स्पष्ट किया जा चुका है, आप के वाणिज्यिक चैनलों पर इन्हें अनौपचारिक तथा बातचीत की शैली में प्रस्तुत किया जाता है। कुछ कार्यक्रमों जैसे पत्रिका आदि में एक से ज्यादा उद्घोषक भी होते हैं।

2. **रेडियो वार्ता**—रेडियो वार्ता संभवतः सर्वाधिक पुराने फॉर्मेट में से एक है। भारत तथा ब्रिटेन में यह परम्परा रही है कि विद्वान या विशेषज्ञों को विषय विशेष पर 10 या 15 मिनट बोलने के लिए बुलाया जाता है। इन वार्ताओं को रेडियो की वार्तालाप शैली में व्यवस्थित किया जाता है। पिछले कुछ समय से लंबी अवधि की वार्ताओं के प्रति लोगों की रुचि घटी है। अब कम अवधि की वार्ताओं का ज्यादातर प्रसारण हो रहा है। आप ऐसी वार्ताओं को जनसेवा प्रसारक रेडियो स्टेशनों से सुन सकते हैं।

(3) **रेडियो साक्षात्कार**—क्या आपने कभी किसी का साक्षात्कार लिया है? संभवतः हाँ। समाचारपत्र, पत्रिका, रेडियो, टीवी आदि जनमाध्यमों में पत्रकार इस तकनीक का प्रयोग सूचनाएँ इकट्ठा करने के लिए करते हैं। विषयवस्तु, उद्देश्य तथा समयावधि के आधार पर साक्षात्कार कई प्रकार के हो सकते हैं।

प्रथम श्रेणी पूर्णरूपेण साक्षात्कार कार्यक्रमों की है। इनकी अवधि 10 मिनट, 30 मिनट या 60 मिनट तक हो सकती है। यह साक्षात्कार के विषय तथा उस व्यक्तित्व पर निर्भर करता है, जिसका हम साक्षात्कार ले रहे हैं। इनमें से अधिकांश साक्षात्कार व्यक्तित्व आधारित होते हैं। आपने साहित्य, सिनेमा, राजनीति, समाजसेवा, खेल आदि से जुड़े प्रसिद्ध व्यक्तित्वों से लंबे साक्षात्कार के बारे में सुना भी होगा।

दूसरी श्रेणी उन साक्षात्कारों की है जिनका इस्तेमाल विभिन्न रेडियो कार्यक्रमों

जैसे रेडियो डाक्यूमेंट्री आदि में होता है। इस तरह के साक्षात्कार संक्षिप्त, प्रश्नोत्तर आधारित तथा सीमित परिमाप में होते हैं। इनका उद्देश्य संक्षेप में विषय पर जानकारी प्राप्त करना होता है।

तीसरी श्रेणी समाचार तथा समसामयिक कार्यक्रमों में साक्षात्कार आधारित कार्यक्रमों की होती है। क्या आपने रेडियो पर इस तरह के साक्षात्कार सुने हैं?

फोन–इन कार्यक्रम लोकप्रिय होते जा रहे हैं। आपने श्रोताओं से सीधा प्रसारित साक्षात्कार सुना होगा। यह साक्षात्कार अंतःक्रियामूलक या परस्पर अनौपचारिक संवाद की शैली में होते हैं।

इनके अतिरिक्त साक्षात्कार आधारित रेडियो कार्यक्रम की एक और श्रेणी होती है। जनता की राय जानने के लिए सामान्य लोगों से या उस विषय, सम सामयिक संदर्भ की जानकारी रखनेवाले लोगों से एक या दो प्रश्न पूछे जाते हैं। उदाहरणार्थ, जब संसद में केंद्रीय सामान्य बजट या रेल बजट प्रस्तुत किया जाता है तो रेडियो से जुड़े लोग आम लोगों से इस विषय पर प्रतिक्रिया पूछते हैं। उनके नाम तथा परिचय पूछना इसमें आवश्यक नहीं होता। इस तरह के कार्यक्रमों को 'वॉक्स–पॉप' कहते हैं जो लैटिन से व्युत्पन्न है तथा जिसका अर्थ जनता की आवाज है।

रेडियो साक्षात्कारकर्ता के रूप में आपको सामान्य–जागरूकता तथा संप्रेषण कौशल का स्तर अच्छा होना चाहिए तथा आपमें मेहनत करने की प्रवृत्ति एवं जिज्ञासा होनी चाहिए।

(4) **रेडियो परिचर्चा**—जब आपके परिवार में या मित्र को कोई परेशानी होती है तो आप नहीं कहते कि आओ चर्चा कर लें? हाँ, हम ऐसा करते हैं। चर्चा–परिचर्चा से हम समस्याओं का हल निकालते हैं। किसी परिचर्चा में दो या तीन लोग भाग लेते हैं तथा वे किसी एक निष्कर्ष को प्राप्त करते हैं। रेडियो में यह विधि जनहित के किसी विषय पर लोगों की अलग सोच को सामने लाती है। रेडियो परिचर्चाएँ सामान्यतः ऐसे समकालिक–आर्थिक विषयों पर आधारित होती हैं जिनपर भिन्नमत होते हैं या विवाद होते हैं। अतः जब अलग–अलग विशेषज्ञ अपनी राय देते हैं, तो जनता को विभिन्न मत समझने का अवसर मिलता है। सामान्य तौर पर रेडियो पर ऐसे कार्यक्रम लंबी अवधि–15 से 30 मिनट के होते हैं। दो या तीन वरिष्ठ तथा विषय के जानकार वक्ता तथा विषय पर पकड़ रखने वाला व्यक्ति या पत्रकार जो संयोजक की भूमिका निभाता है, किसी विषय पर 15–30 मिनट तक चर्चा करते हैं। संयोजक परिचर्चा का संचालन करता है। वह विषय का परिचय देता है तथा यह ध्यान रखता है कि सभी वक्ता विषय पर विचार रख सकें तथा उन्हें समान समय मिले।

टिप्पणी

(5) **रेडियो डाक्यूमेंट्री/रूपक**—आप सिनेमा हॉल में जो फिल्म देखते हैं वह फीचर फिल्म होती है जो कहानी पर आधारित होती है तथा वह वास्तविक नहीं होती। लेकिन डाक्यूमेंट्री फिल्में भी होती हैं जो वास्तविक व्यक्तियों या मुद्दों पर आधारित होती हैं। आप टेलीविजन पर जो कार्यक्रम देखते हैं उनमें से बहुत सारे कार्यक्रम शैक्षणिक तथा जनसेवा डाक्यूमेंट्री के रूप में होते हैं। रेडियो भी इस फॉर्मेट का प्रयोग करता है। डाक्यूमेंट्री फिल्मों के विपरीत रेडियो डाक्यूमेंट्री में केवल ध्वनि का प्रयोग होता है जैसे मनुष्य की आवाज, संगीत तथा ध्वनि प्रभाव। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि रेडियो डाक्यूमेंट्री वह कार्यक्रम है जो वास्तविक ध्वनियों, वास्तविक व्यक्तियों, उनके विचारों तथा अनुभवों पर आधारित होता है। रेडियो डाक्यूमेंट्री तथ्यों पर आधारित होती है जिसे आकर्षक तरीके से तथा नाटकीय तत्वों का समावेश करके प्रस्तुत किया जाता है। डाक्यूमेंट्री रेडियो की अपनी रचनात्मक विधा है। डाक्यूमेंट्री रेडियो निर्माता को मनुष्य की आवाजें, स्क्रिप्ट, संगीत तथा ध्वनि प्रभावों को प्रभावी तरीके से इस्तेमाल करने के लिए तत्पर होना चाहिए। रेडियो डाक्यूमेंट्री को ही रेडियो रूपक या फीचर भी कहते हैं।

(6) **रेडियो नाटक**—रेडियो नाटक थियेटर या हॉल में होने वाले किसी भी नाटक की तरह होता है। दोनों में यही फर्क होता है कि जहाँ सामान्य नाटकों में अभिनेता, मंच, सेट, पर्दे, अन्य वस्तुओं की गतिशीलता तथा क्रियात्मकता होती है, रेडियो नाटक में केवल तीन तत्व होते हैं। यह मानवीय स्वर, संगीत तथा ध्वनि प्रभाव हैं। रेडियो पर कल्पनाशीलता तथा सलाह देने की विशिष्ट क्षमता का प्रयोग रेडियो नाटक निर्मित करने में किया जाता है। उदाहरणार्थ यदि आपको रेडियो नाटक में उत्तर भारतीय विवाह समारोह का दृश्य प्रस्तुत करना है तो आप इसमें होने वाली सारी रस्मों, बातों को नहीं जुटा सकते। ऐसे में आप शहनाई की मधुर ध्वनि तथा लोगों की आह्लादित आवाजों का प्रयोग कर श्रोता के मन में वैवाहिक समारोह के दृश्य का भाव उत्पन्न कर सकते हैं। अभिनेताओं के स्वर, संगीत तथा ध्वनि प्रभावों से रेडियो पर कोई दृश्य उपस्थित किया जा सकता है।

(7) **आँखों देखा हाल**—यदि आप क्रिकेट या फुटबॉल मैच स्टेडियम में देखने नहीं जा पाते तो आप इसे टेलीविजन पर देख सकते हैं। लेकिन इसके लिए आपको अपने घर या ऐसे स्थान पर रुकना होगा जहाँ टेलीविजन हो। लेकिन यदि आप यात्रा कर रहे हैं या कहीं बाहर हैं, तो आप मैच का आँखों देखा हाल रेडियो पर सुन सकते हैं। कमेंटेटर आपको मैच का पूरा हाल बताएगा। वह आपको खिलाड़ियों की संख्या, स्कोर, खिलाड़ियों की स्थिति, तथा मैदानी गतिविधियों

टिप्पणी

आदि की जानकारी देगा। अतः आप आँखों देखा हाल सुनकर मैच के दौरान स्टेडियम में होने का एहसास कर सकते हैं। कमेंटेटर को संप्रेषण कला, अच्छी आवाज तथा खेल पर जानकारी से युक्त होना चाहिए। रेडियो पर आँखों देखा हाल विभिन्न खेलों, समारोह जैसे गणतंत्र दिवस, आयोजन जैसे त्यौहार, मेला, रथयात्रा, मंत्रिपरिषद् का शपथ ग्रहण समारोह, राष्ट्रीय नेताओं की अंतिम यात्रा आदि पर हो सकता है। आजकल आप रेडियो से आँखों देखा हाल, क्रिकेट मैच व अन्य मैचों की कमेंट्री अपने मोबाइल पर भी सुन सकते हैं।

(8) **पत्रिका कार्यक्रम**—आप कागजों पर मुद्रित पत्रिकाओं से अवश्य परिचित होंगे। यह साप्ताहिक, द्वि–साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक आदि के रूप में प्रकाशित होती हैं। कुछ पत्रिकाएँ सभी पाठकों के लिए होती हैं तथा कुछ किसी वर्ग विशेष के लिए। यह पत्रिकाएँ बच्चे, महिलाएँ, युवा, स्वास्थ्य, धर्म, खेल, विज्ञान, संगीत, सिनेमा आदि विषयों पर हो सकती हैं। यदि आप इन पत्रिकाओं का अवलोकन करें तो उनमें लेख, समीक्षा, रूपक, फोटो रूपक आदि मिलेंगे। रेडियो पर भी प्रिंट मीडिया की तरह पत्रिका प्रस्तुत की जाती है।

रेडियो पत्रिका प्रायः निर्धारित समय पर साप्ताहिक या मासिक रूप से प्रसारित की जाती है। इसका अर्थ है कि इसकी बारंबारता या आवृत्ति तय होती है। इसी तरह इसमें विविध विषयों का समावेश होता है। रेडियो के अनेक फॉर्मेट का इसमें समावेश होता है। यह वार्ताएँ, परिचर्चा, साक्षात्कार, समीक्षा, संगीत आदि हो सकती हैं। इसी तरह पत्रिका में शामिल विभिन्न कार्यक्रमों का समय भी अलग–अलग हो सकता है। रेडियो पत्रिका की एक अन्य पहचान इसकी सिग्नेचर ट्यून है। सिग्नेचर ट्यून वह विशेष संगीत है जो किसी कार्यक्रम विशेष के लिए तैयार होता है। इसकी तुलना किसी पत्रिका के नाम शीर्ष या आमुख से की जा सकती है। पत्रिका कार्यक्रम का एक नाम होता है तथा एक या दो प्रस्तोता सभी कार्यक्रमों को प्रस्तुत करते हैं। पत्रिका के आरंभ में सिग्नेचर ट्यून बजती है तथा इसके पश्चात् प्रस्तोता अंक विशेष की सामग्री के शीर्षक बताते हैं। प्रस्त्रोता पत्रिका की निरंतरता तथा संबद्धता बनाए रखने का भी काम करते हैं।

पत्रिका कार्यक्रम सामान्यतः विशिष्ट श्रोतावर्ग के लिए तैयार किए जाते हैं। जैसा कि नाम से स्पष्ट है कि विशेषीकृत श्रोताओं की आवश्यकताएँ विशिष्ट होती हैं जिसके बारे में पूर्व में बताया जा चुका है।

(9) **समाचार**—रेडियो के वार्ता/वक्तव्य आधारित कार्यक्रमों में समाचार सर्वाधिक लोकप्रिय कार्यक्रम है। रेडियो केन्द्र प्रत्येक घंटे के अंतराल पर समाचार बुलेटिन तथा समाचार कार्यक्रम प्रसारित करते हैं। भारत में रेडियो पर समाचार प्रसारण की अनुमति केवल आकाशवाणी को है। समाचार बुलेटिन पाँच मिनट से लेकर

टिप्पणी

30 मिनट तक के होते हैं। लम्बे समाचार बुलेटिन में साक्षात्कार, रूपक, समीक्षा तथा विशेषज्ञ टिप्पणी का भी समावेश होता है।

- **संगीत :** जब हम रेडियो कहते हैं तो सबसे पहले हमें संगीत का ध्यान आता है। संगीत रेडियो का मुख्य आकर्षण है। बिना संगीत के रेडियो की कल्पना नहीं की जा सकती। रेडियो पर संगीत के कार्यक्रम होते हैं तथा विभिन्न कार्यक्रमों में भी संगीत का उपयोग होता है। इनमें सिग्नेचर ट्यून तथा रेडियो नाटकों एवं रूपक में संगीत का प्रयोग सम्मिलित है। रेडियो भारत की समृद्ध संगीत परंपरा को प्रतिध्वनित करता है। आइए हम संगीत के विभिन्न प्रकारों का परिचय प्राप्त करें।

शास्त्रीय संगीत

भारत में मुख्यतः शास्त्रीय संगीत के तीन रूप प्रचलित हैं—

- हिन्दुस्तानी शैली
- कर्नाटक शैली
- पाश्चात्य शैली

इसके अतिरिक्त गायन तथा वादन के रूप प्रचलित हैं। उपशास्त्रीय संगीत जैसे दादरा, ठुमरी आदि मौजूद हैं। वाद्ययंत्र संगीत के रूपों में तार आधारित (सितार, सरोद आदि) मुख वायु आधारित (बाँसुरी, शहनाई आदि) तथा नाद (ड्रम) वाद्य आदि सम्मिलित हैं। आपने रेडियो पर इस तरह का संगीत सुना होगा।

आप देश में प्रचलित विविध प्रकार के भक्ति तथा लोक संगीत के बारे में भी जानते होंगे। यह भी रेडियो पर प्रसारित किए जाते हैं।

लेकिन संगीत का सबसे लोकप्रिय रूप कौन सा है? आप निश्चित तौर पर कहेंगे फिल्म संगीत। हालांकि फिल्मों के गीत देश की अन्य अनेक भाषाओं में भी हैं लेकिन हिंदी फिल्म संगीत देशभर में लोकप्रिय है। अधिकांश रेडियो स्टेशन, चाहे वह जनसेवा प्रसारक हों अथवा वाणिज्यिक, हिंदी फिल्म गीत सभी जगह सुने जाते हैं।

हल्के पश्चिमी तथा पॉप संगीत का भी अपना अलग प्रशंसक वर्ग है तथा युवाओं का एक बड़ा वर्ग पश्चिमी पॉप संगीत सुनना पसंद करता है।

- **ध्वनि प्रभाव**

आइए देखें किस तरह रेडियो फॉर्मेट में ध्वनि का प्रयोग होता है—

- रुचि जगाने में ध्वनि महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।
- ध्वनि हास्य बोध पैदा करने में भी प्रयुक्त हो सकती है।
- ध्वनि का प्रयोग मूड बनाने या उसे खुशनुमा करने में भी किया जा सकता है।

पाठगत प्रश्न 11.2

(1) उपयुक्त शब्दों की सहायता से रिक्त स्थानों की पूर्ति करें–

(i) उद्घोषकों को ....., ... भी कहते हैं।

(ii) रेडियो के लिए लिखे गये भाग को ..... भी कहते हैं।

(iii) उद्घोषणा में आप द्वारा लगाए गए ..... का नाम, तथा प्रसारण के ..... तथा ..... का उल्लेख होता है।

(iv) ....., ... तथा उद्देश्य के आधार पर रेडियो साक्षात्कार के विविध रूप हो सकते हैं।

(v) वास्तविक लोगों तथा मुद्दों पर आधारित फिल्म ..... कहलाती है।

(2) रेडियो फॉर्मेट के तत्वों को सूचीबद्ध करें।

(3) रेडियो परिचर्चा तथा रेडियो नाटक के बीच अंतर स्पष्ट करें।

(4) निम्न का सही मिलान करें–

(i) उद्घोषणाएँ	(क) गणतंत्र दिवस परेड
(ii) आँखो देखा हाल	(ख) सबसे पुराना रेडियो फॉर्मेट
(iii) साक्षात्कार	(ग) श्रोताओं को सूचित करना
(iv) परिचर्चा	(घ) प्रश्न पूछना
(v) रेडियो वार्ता	(च) संयोजक

11.3 सूचना प्रौद्योगिकी आधारित फॉर्मेट

भारत ने सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में महत्वपूर्ण छलांग लगाई है तथा एक जन माध्यम के रूप में प्रसारण के लिए सूचना प्रौद्योगिकी के प्रयोग में रेडियो आगे रहा है। आइए सूचना प्रौद्योगिकी आधारित कुछ कार्यक्रमों की चर्चा करें।

(1) **फोन-इन कार्यक्रम**—प्रौद्योगिकी विकास के इस समय में फोन–इन फॉर्मेट एक महत्वपूर्ण फॉर्मेट है। यह एक अंतः क्रियामूलक कार्यक्रम है जिसमें श्रोता तथा प्रस्तोता आपस में संवाद कायम करते हैं। उनकी बातचीत सीधे प्रसारित की जाती है। श्रोता को उसकी बात सुनी जाने तथा उसी रूप में प्रसारित किए जाने से संतुष्टि मिलती है। अन्य श्रोता भी उसकी आवाज सुनते हैं। ऐसे कार्यक्रमों का व्यापक प्रचार करना चाहिए जिससे श्रोता अपनी शिकायतें, अनुरोध, प्रश्न, प्रशंसा आदि अभिव्यक्त करने के लिए तैयार रह सकें। दिए हुए नंबरों पर श्रोता फोन करते हैं तथा स्टूडियो में कार्यक्रम के दौरान विशेषज्ञ इस पर चर्चा करते हैं। इस फॉर्मेट का आरंभ फरमाइशी फिल्म गीत कार्यक्रम के लिए हुआ था। अब इसका प्रयोग व्यापक रूप से स्वास्थ्य कार्यक्रमों, ग्रामीण प्रसारणों, सरकार तथा प्रशासन के प्रति शिकायतों आदि कार्यक्रमों में किया जा रहा है।

चित्र 11.1 : फोन-इन कार्यक्रम

(2) **रेडियो ब्रिज**—रेडियो ब्रिज फॉर्मेट में विभिन्न स्टेशनों को आपस में जोड. दिया जाता है। देश के हर हिस्से से एक साथ संपर्क स्थापित हो जाते हैं। इस तकनीक में मान लीजिए एक विशेषज्ञ जो चेन्नई में बैठा है दिल्ली स्थित स्टूडियो में आमंत्रित आम श्रोता से संवाद कर सकता है। आकाशवाणी ने पहली बार इसका प्रयोग चुनावों के दौरान किया था।

टिप्पणी

(3) **इंटरनेट रेडियो**—इंटरनेट रेडियो देश में उभरता हुआ नया प्रयोग है। कंप्यूटर मॉडम की सहायता से हजारों रेडियो स्टेशन संचालित हो रहे हैं। यह एक नया फॉर्मेट है जिसमें न तो फ्रिक्वेंसी की आवश्यकता होती है और न ही प्रसारण लाइसेंस की। तुलनात्मक रूप से इस तरह के रेडियो स्टेशन शुरू करना सस्ता विकल्प है। इसके अपने हानि तथा लाभ हैं। अब सभी राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय रेडियो स्टेशन—बीबीसी, वॉयस ऑफ अमेरिका, आकाशवाणी आदि इंटरनेट पर उपलब्ध हैं। इससे अब कंप्यूटर पर काम करते समय उसी से रेडियो सुनना भी संभव हुआ है।

चित्र 11.2

आकाशवाणी ने अपनी इंटरनेट सेवा पहली मई 1998 को आरंभ की। इसके साथ ही आकाशवाणी की पहुँच अमेरिका तथा कनाडा तक संभव हो सकी।

पाठगत प्रश्न 11.3

(1) उपयुक्त शब्दों की सहायता से खाली स्थान भरें—

(i) फोन–इन कार्यक्रम को .... कार्यक्रम भी कहते हैं।

(ii) आकाशवाणी की इंटरनेट सेवा .... को आरंभ हुई।

(iii) फोन–इन कार्यक्रम अग्रिम .... माँगते हैं।

(iv) रेडियो ब्रिज का अर्थ विभिन्न रेडियो स्टेशन .... है।

टिप्पणी

(2) किन्ही तीन सूचना प्रौद्योगिकी आधारित फॉर्मेट का उल्लेख करें।

(3) किन्ही तीन क्षेत्रों का उल्लेख करें जिनमें फोन–इन कार्यक्रमों का उल्लेख होता है।

(4) कंप्यूटर की सहायता से उपलब्ध रेडियो फॉर्मेट का नाम बताइए।

11.4 आपने क्या सीखा

टीवी कार्यक्रम फॉर्मेट–

– **रेडियो कार्यक्रम निर्माण के समय ध्यान देने वाले कारक**

– क्षेत्र की आबादी, लिंगानुपात, प्रयुक्त बोली या भाषा, विद्यालय/महाविद्यालय की संख्या, स्वास्थ्य सुविधाएँ, धर्म, जलवायु, कृषि उपजें, परिवहन सुविधाएँ, लोगों के मुख्य व्यवसाय।

– **रेडिया फॉर्मेट**

– रेडियो फॉर्मेट के विविध तत्व–वक्तृत्व कथन, संगीत तथा विशिष्ट प्रभाव।

– फॉर्मेट के प्रकार–उद्घोषणाएँ, रेडियो वार्ता, रेडियो साक्षात्कार, रेडियो परिचर्चा, रेडियो पत्रिका, रेडियो डाक्यूमेंट्री तथा रूपक, आँखों देखा हाल, रेडियो नाटक, समाचार, संगीत।

– सूचना प्रौद्योगिकी आधारित फॉर्मेट–फोन–इन, रेडियो ब्रिज, इंटरनेट रेडियो।

11.5 पाठांत प्रश्न

(1) रेडियो कार्यक्रम निर्माण से पूर्व ध्यान रखे जाने वाले कारकों का उल्लेख करें।

(2) उदाहरण सहित विविध रेडियो कार्यक्रम फॉर्मेट की व्याख्या करें।

(3) रेडियो द्वारा प्रयुक्त सूचना प्रौद्योगिकी आधारित फॉर्मेट का उल्लेख करें।

11.6 पाठगत प्रश्नों के उत्तर

11.1 (1) कृपया खंड 11.1 देखें।

टिप्पणी

(2) उदाहरण : समाचार, संगीत कार्यक्रम

(3) (i) शिक्षित करना, रेडियो

(ii) समाचार, कमेंट्री, समाचार

(iii) समुदाय, गरीब, अमीर

(iv) भाषा, समय, प्रकार

(v) श्रोताओं की आवश्यकताएँ

11.2 (1) (i) रेडियो जॉकी/ प्रस्तुतकर्ता

(ii) उच्चारित शब्द

(iii) स्टेशन, फ्रिक्वेंसी, समय

(iv) अवधि, विषयवस्तु

(v) डाक्यूमेंट्री

(2) उच्चारित शब्द, संगीत, ध्वनि प्रभाव

(3) कृपया खंड 11.2 देखें।

(4) (i) द (ii) क (iii) घ (iv) च (v) ख

11.3 (1) (i) संवादमूलक (ii) पहली मई 1998 (iii) प्रचार (iv) जोड़ना

(2) कृपया खंड 11.3 देखें

(3) कृपया खंड 11.3 देखें

(4) इंटरनेट रेडियो